अभी चले जाओ!

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक — प्यारेलाल अंक १६

मुद्रक और प्रकाशक -
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १८ मओ, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

गांधीजीके सोचने और काम करनेका तरीक़ा

कुछ ही वक़्त बाद गांधीजीके दुबारा दिल्ली आनेसे दिल्लीवालोंको फिर रोज़ शामको अुनकी तक़रीर सुननेका मौक़ा मिला। अिस बार लोग प्रार्थना-सभामें पहलेसे ज़्यादा तादादमें अिकट्ठे होते थे। आज देशमें सब तरफ़ खतरा-ही-खतरा दिखाओी देता है। लोगोंमें श्रद्धा और विश्वास नामको भी नहीं रहे। अुनके दिल नफ़रत, अविश्वास और निराशासे भरे हुअे हैं। अैसी हालतमें अगर लोग गांधीजीके मुँहसे सान्त्वनाके दो शब्द सुननेके लिअे हज़ारोंकी तादादमें अिकट्ठे हों, तो कोओी ताज्जुब नहीं। आज अकेले गांधीजी ही अैसे हैं जिनके दिलमें किसीके लिअे नफ़रत नहीं है और जिनके शब्द-भण्डारमें 'निराशा' नामका शब्द ही नहीं है।

यह बड़े दुःखकी बात है कि पहलेकी तरह अिस बार भी कुछ लोगोंने प्रार्थना नहीं करने दी। .क़ुरान शरीफ़की आयत शुरू करते ही किसी-न-किसीकी अेतराज़भरी आवाज़ सुनाओी देती। और, अहिंसाके सच्चे पुजारीके नाते गांधीजी हज़ारों लोगोंको सिर्फ़ अेक आदमीकी अिच्छाके सामने झुकनेकी बात कहते, क्योंकि वे किसीको डरा-धमकाकर क़ाबूमें लाना ठीक नहीं समझते। जो लोग सामूहिक प्रार्थनामें शामिल होनेके लिअे आते, अुन्हें सिर्फ़ अेक आदमीकी बेवक़ूफ़ीकी वजहसे प्रार्थनासे महरूम रहना बड़ा खलता था। मुझे खासकर बड़ी तादादमें अिकट्ठी होनेवाली औरतोंके लिअे बहुत अफ़सोस होता, क्योंकि वे प्रार्थनाके बाद गांधीजीका भाषण सुननेके लिअे नहीं, बल्कि राम-धुन गानेके लिअे ही आती थीं। लेकिन लोगोंकी भीड़ने तारीफ़के लायक़ रवादारी (सहिष्णुता) और शान्ति दिखाओी। हमारे खयालमें गांधीजी अपने व्यवहारसे जो सबक़ लोगोंको सिखाना चाहते थे, वह वे सीख चुके थे।

देशमें लगातार फ़िरक़ेवाराना झगड़े चलते रहते हैं, फिर भी गांधीजी कभी निराश नहीं होते। अुन्हें हमेशा यह आशा बनी रहती है कि कभी-न-कभी अिस पागलपनका अन्त होगा। अेक दोस्तने अुनसे पूछा — "क्या हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीचकी मौजूदा खाओी हमेशा बनी रहेगी? वे कभी अेक न होंगे?" गांधीजीने जवाब दिया — "अिस तरहकी हालत हमेशा क़ायम नहीं रह सकती। अगर हिन्दू-मुसलमानोंके आपसी झगड़े हमेशा चलते रहे, तो अिसका मतलब होगा कि दोनों धर्म सच्चे नहीं है।" अपनी सारी तक़रीरोंमें गांधीजी लोगोंसे रोज़ यही अपील करते थे कि अुन्हें अपने धर्मके प्रति वफ़ादार रहना चाहिये। असहिष्णुता या गैर-रवादारी और नफ़रत धर्मको खत्म कर देती है। आखिरी शामको जब अेक औरतने .क़ुरानकी आयत पढ़नेपर अेतराज़ किया, तो गांधीजीको बड़ा सदमा पहुँचा। अुनके दिलकी वेदना अुनके चेहरेपर साफ़ दिखाओी देती थी। गांधीजीको यह आशा नहीं थी कि कोओी औरत भी कभी अिस तरहका अेतराज़ अुठायेगी। क्योंकि अुन्हें हमेशा यह अुम्मीद रहती है कि मर्दोंकी बनिस्बत औरतें अिखलाक़ी नज़रसे ज़्यादा आगे बढ़ी होती हैं। अेक दोस्तने पूछा — "अगर पाकिस्तान मंज़ूर कर लिया जाय, तो क्या वह अपनी मौत नहीं मर जायगा?" गांधीजीने जवाब दिया — "क्या आप पाकिस्तानका कोओी खयाल मुझे दे सकते हैं? जिसे हम जानते ही नहीं, अुसके बारेमें क्या जवाब दिया जाय? मैंने पाकिस्तानको समझनेकी बहुत कोशिश की, लेकिन कामयाब नहीं हुआ। और, अगर पंजाब और बंगाल पाकिस्तानके नमूने हों, तो वह कभी टिक नहीं सकता।" हिन्दुस्तानके बँटवारेके बारेमें गांधीजीकी राय आज भी बदली नहीं है। वे आज भी ज़ोरदार शब्दोंमे अखण्ड हिन्दुस्तानकी हिमायत करते हैं। अुन्होंने कओी बार अपने दोस्तोंसे कहा है — "हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश हुकूमत अुठ जानेके बाद सूबोंके बँटवारे और दूसरी अैसी तमाम बातोंका आखिरी फ़ैसला लोग .खुद आपसमें कर लेंगे। हर बातके लिअे ब्रिटिश हुकूमतके मुँहताज रहनेसे हिन्दुस्तानके लोग निराश और बेबस हो गये हैं और अुनकी मिली-जुली ज़िंदगी खत्म हो गओी है। यही हालत देशी रियासतोंकी भी है। ब्रिटिश हुकूमतने अुन्हें हमेशा अपनी हिफ़ाज़तमें रखा है। लेकिन अब वह सहारा खत्म हो रहा है और अगर राजालोग अपनी गद्दियों पर बने रहना चाहते हैं, तो अुन्हें आज़ाद हिन्दुस्तानके हिस्से बनकर रहना होगा। वर्ना अुनकी कोओी हस्ती न रहेगी। अुनकी आज़ादी अिसीमें है कि वे अपनी सत्ता प्रजाको सौंप दें और अुनके पहले दरजेके सेवक बन जायँ।

अेक फ्रेन्च दोस्तको जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा — "मुझे लगता है कि हिन्दुस्तानमें समाजवादी राज क़ायम होकर रहेगा। मुझे आशा है कि हिन्दुस्तानी समाजवाद आराम कुर्सियोंपर बैठकर अुसूलोंकी डींग हाँकनेवालोंकी चीज़ न रहेगा, बल्कि अमली रूप अख़्तियार करेगा। अिस समाजवादका मक़सद साफ़ और पूर्ण होना चाहिये, वर्ना हिन्दुस्तानकी समाजवादी सरकार किसी अनिश्चित रास्ते चलनेसे नाकामयाब हो सकती है। मुझे .खुद तो यही अुम्मीद है कि हिन्दुस्तानका आअिन्दा समाज अहिंसाकी बुनियादपर खड़ा होगा। तभी समाजवाद हिन्दुस्तानमें हमेशा क़ायम रह सकेगा।"

अुन्हीं दोस्तने पूछा — "क्या हिन्दुस्तानसे धर्म मिट जायगा?" गांधीजीने बिजलीकी गतिसे जवाब दिया — "अगर धर्म मिट गया, तो हिन्दुस्तान भी मिट जायगा। आज हिन्दू और मुसलमान धर्मकी बाहरी रीत-रस्मोंसे चिपटे हुअे हैं। वे पागल बन गये हैं। लेकिन मेरे खयालमें अुनका यह मज़हबी पागलपन साफ़ पानीके अूपर आ जानेवाले फेन और गन्दगीकी तरह है। जब दो नदियाँ मिलती हैं, तो पानीकी सतहपर फेन और मैल दिखाओी देने लगता है। मगर नीचेका पानी काँच-सा साफ़ और शान्त होता है। फेन और दूसरी गन्दगी अपने-आप बहकर समुद्रमें चली जाती है और दोनों नदियाँ मिलकर साफ़ और पाक बहने लगती हैं।"

अुन्हीं दोस्तसे गांधीजीने कहा — "ब्रिटेन अेक वक़्त समुन्दरोंका मालिक था। कोओी देश अुसके रास्तेमें आनेवाला नहीं था। अगर वह हिन्दुस्तानके साथ सचाओी और अीमानदारीका बरताव करेगा, तो वह दुनियाकी नैतिकता या अिखलाक़का मालिक बन जायगा। यह समुन्दरकी मालिकीसे कहीं ज़्यादा बड़ी अिज़्ज़त है। तभी वह दुनियाके तक़दीरका फ़ैसला कर सकता है। मेरा विश्वास है कि ब्रिटेनमें यह क़ाबलीयत है। मैं अंग्रेजोंको अच्छी तरह जानता हूँ। मैंने अपनी ज़िन्दगीके कुछ अुम्दा साल अुनके बीच बिताये हैं। मैंने

www.vinoba.in

अुनके लिअे अिस्तेमाल किये जानेवाले 'विश्वासघाती अिंग्लैण्ड' नामका हमेशा विरोध किया है और कूपरकी मशहूर कविता 'हैपोक्रेसी अिज़ अेन ओड टु वर्च्यू' (अच्छे आदमी बननेका धोखा देना साधुपनकी तारीफ़ करना है) को पसन्द किया है। लेकिन ब्रिटेनको अभी अिस बूँचाअी तक पहुँचना है।"

अिस तरह गांधीजी लोगोंको हिंसा और नफ़रतके रास्तेसे हटाकर प्रेमके रास्ते ले जानेकी अपनी यात्रा अकेले अपने ढंगसे करते रहते हैं। वे अंग्रेजों, राजा-महाराजाओं, हिन्दुओं, मुसलमानों, व्यक्तियों, समाज, कम तादादवालों, औरतों, अखबारनवीसों, और सारी दुनियाको जो कुछ कहते हैं, चुनौतीके साथ कहते हैं। आज सारी दुनियाकी आँखें हिन्दुस्तानपर लगी हुअी हैं। क्या वह अपने नेताके प्रति वफ़ादार रहकर अपनेको ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाको शान्तिके रास्ते ले जायगा? यह बड़ी चुनौती और भारी ज़िम्मेदारी है।

नअी दिल्ली १०-५-'४७

(अंग्रेज़ीसे) अमृतकुँवर

धर्मकथा

(भाग १० के अंक ४९ के पृ० ४६७ से आगे)

[९ वीं कथा शेखसादी से, १० वीं डब्ल्यु० अेच० जॉन हॉग्ज़े द्वारा प्रकाशित डेवनपोर्ट अैडम्सकी 'दी सीक्रेट ऑव् सक्सेस' यानी 'सफलताकी कुंजी' नामक पुस्तकसे और ११ वीं कथा जनवरी सन् १९४७के 'वर्ल्ड डाअीजेस्ट' से ली गअी है]

९

मिट्टीके अेक ढेलेसे किसीने पूछा कि 'अितनी खुशबू तुझमें कहाँसे आअी? अुसने जवाब दिया "यह खुशबू मेरी नहीं, मगर मैं गुलाबके फूलकी सोहबतमें रहता हूँ।"

१०

बोस्टनके अेक व्यापारीके मरनेके बाद अुसका लिखा हुआ यह दस्तावेज़ मिला था—

अीश्वरकी मेहरबानीसे मैं अपनी पूँजीको ५० हज़ार डालरसे कभी बढ़ने न दूँगा। अीश्वरकी मेहरबानीसे मेरे व्यापारमें जो असली नफ़ा होगा, अुसका चौथा हिस्सा मैं दानमें दे दूँगा। अगर मेरी पूँजी २० हज़ार डालरकी होगी, तो अपने असली नफ़ेका आधा हिस्सा मैं दान कर दूँगा। अगर मेरी पूँजी ३० हज़ार डालरकी होगी, तो अपने नफ़ेका तीन चौथाअी हिस्सा मैं दान कर दूँगा और मेरी पूँजी ५० हज़ार डालरकी होनेके बाद मैं अपना सारा-का-सारा नफ़ा दान कर दूँगा। अेसा करनेमें हे अीश्वर, तू मेरी मदद करना या फिर मुझे अेक तरफ़ हटाकर मुझसे ज़्यादा निष्ठावाले आदमीको तू यह नफ़ा देना'।

अपने अिस अिक़रारको वह सचाअी के साथ पूरा करता रहा। वह अपनेको दानकी रक़म तक़सीम करनेवाला अीश्वरका सेवक मानता था और अुसकी दौलतका पता अुसकी दानकी हुअी रक़मसे लगता था। महावीर स्वामीके दस अुपासकोंकी तरह वह जैन श्रावकोंके परिग्रह-परिमाण व्रतका पालन करता था। क्या आज अैसे श्रावक कहीं हैं?

११

अेक फ़क़ीर था। वह ज़्यादा वक़्त मौन रहता था और अगर सिर हिलाने या अिशारा करनेसे काम चल जाता, तो वह कभी बोलता नहीं था।

अेक बार अेक आदमी फ़क़ीरके पास आया और आज़िज़ीका दिखावा करके बोला—"साअींबाबा, आपको तीन सवाल पूछनेकी तक़लीफ़ दूँ?"

फ़क़ीरने सिर हिलाकर मंज़ूरी ज़ाहिर की।

"साअींबाबा, पहला सवाल अल्लाहके बारेमें है। लोग कहते हैं कि वह है, मगर मैं अुसे देख नहीं सकता और न कोअी मुझे अुसको बता सकता, अिसलिअे मैं अल्लाहको नहीं मानता। अिस बातका खुलासा आप करेंगे?"

फ़क़ीरने सिर हिलाया।

"मेरा दूसरा सवाल शैतानके बारेमें है। क़ुरान कहता है कि शैतान आगसे बना है। अगर अैसी बात हो, तो दोज़खकी आग अुसे किस तरह जला सकती है?"

फ़क़ीरका सिर फिर हिला।

"तीसरा सवाल मेरे अपने बारेमें है। क़ुरान कहता है कि अिन्सानका हर काम पहलेसे ही निश्चित किया हुआ होता है। मगर जब अल्लाह खुद ही तय कर देता है कि मुझे फ़लाँ काम करना ही पड़ेगा, तो फिर वह मेरा अिन्साफ़ करनेके लिअे कैसे बैठ सकता है? मेहरबानी करके अिसका जवाब दीजिये।"

फ़क़ीरने फिर सिर हिलाया। अुसने मिट्टीका अेक ढेला लिया और पूरी ताक़तके साथ अुस सवाल पूछनेवालेके मुँहपर दे मारा।

वह आदमी गुस्सा हो गया। अुसने फ़क़ीरको पकड़वाकर काज़ीके सामने पेश किया और फ़रियाद की कि ढेला लगनेसे मुझको बेहद तक़लीफ़ हो रही है। काज़ीने फ़क़ीरसे पूछा—'क्या फ़रियादीकी बात सच है?"

फ़क़ीरने जवाब दिया—"यह आदमी मेरे पास आया और अिसने मुझसे तीन सवाल पूछे। मैंने बड़ी सावधानीसे अुनके जवाब दिये। अिसने कहा—लोग कहते हैं कि अल्लाह है, मगर न तो यह अुसे देख सकता और न दूसरा कोअी अिसे बता सकता है। अिसलिअे यह अल्लाहको नहीं मानता। अब यह कहता है कि मैंने अिसके मुँहपर ढेला फेंका जिससे अिसे तक़लीफ़ होती है। मगर मैं अिसकी तक़लीफ़को देख नहीं सकता। क्या जनाब अुससे अपनी तक़लीफ़ दिखलानेके लिअे कहेंगे? जब मुझे वह दीखती ही नहीं, तो मैं अुसे कैसे मान सकता हूँ?

काज़ीने फ़रियादीकी तरफ़ देखा और दोनों हँस दिये।

"फिर अिस आदमीने पूछा कि शैतान अगर आगसे बना है, तो दोज़खकी आग अुसे कैसे जला सकती है? आदम मिट्टीसे बना था और यह फ़रियादी क़बूल करेगा कि वह खुद भी मिट्टीसे बना है। मगर जब यह मिट्टीका बना है, तो मिट्टी अिसे चोट कैसे पहुँचा सकती है?"

फ़क़ीरने आगे कहा—"अिसके तीसरे सवालके बारेमें यह कहना है कि अगर खुदाने मेरे लिअे यह तय कर दिया हो कि मैं अिसके मुँहपर ढेला फेंकूँ, तो अिसके लिअे यह मुझे यहाँ खड़ा करनेकी हिम्मत कैसे कर सकता है?"

काज़ीने क़बूल किया कि फ़क़ीरने मिट्टीके ढेलेसे तीनों सवालोंका बराबर जवाब दिया है। फिर भी अुसने फ़क़ीरको सलाह दी कि आगेसे वह सवालोंके जवाब अहिंसक तरीक़ेसे दिया करे।

(अंग्रेज़ीसे) बालजी गोविन्दजी देसाअी

ग्राम-सेवक-विद्यालय

(अखिल भारत ग्राम-अुद्योग-संघ)

१९४२ में ग्राम-सेवक-विद्यालय बंद हो गया था। अुसके बाद अुसका पहला कन्वोकेशन (डिग्रियाँ बाँटनेका जलसा) ३० अप्रैल, १९४७ के दिन हुआ। सी० पी० और बरारके खुराक-खातेके वज़ीर ऑनरेबल श्री आर० के० पाटिलने कन्वोकेशनकी तक़रीर की और कामयाब अुम्मीदवारोंको सर्टिफिकेट बाँटे।

विद्यालयमें कुल ६२ विद्यार्थी थे। अिनमेंसे ११ विद्यार्थियोंको अूँचे दरजेमें पास होनेके और २६ को मामूली दरजेमें पास होनेके सर्टिफिकेट मिले। १५ विद्यार्थियोंको सिर्फ़ दस्तकारियोंके सर्टिफिकेट दिये गये। १० विद्यार्थी नाकामयाब रहे।

विद्यालयका नया सेशन (सत्र) हमेशाकी तरह १ जुलाअी, १९४७ से शुरू होता है। विद्यालयमें दाखिल होनेके लिअे अर्जियाँ ज़्यादा-से-ज़्यादा १५ जून तक पहुँच जानी चाहियें।

अिसके अलावा, सितम्बर १९४७ से गाँवोंके संगठनकी तालीम देनेके लिअे अेक दूसरा कोर्स भी शुरू किया जानेवाला है, जो १ सितम्बर, १९४७ से ३० अप्रैल, १९४८ तक चलेगा। अिस क्लासमें किसी भी यूनिवर्सिटीके मेज्युअेटकी क़ाबलीयत रखनेवाले लोग लिअे जायँगे।

पूरी जानकारी और प्रोस्पेक्टसके लिअे विद्यालयके सुपरिण्टेण्डेण्टको मगनवाड़ी, वर्धा (सी० पी०) के पतेसे लिखा जाय।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

www.vinoba.in

अिन्साफ़से टैक्स लगाया जाय

मिल-मालिकोंने जनताको यह भरोसा करा दिया है कि गाँवोंके अुद्योग-धन्धे बड़े पैमानेपर माल तैयार करनेवाले अुद्योगोंसे होड़ नहीं कर सकते, क्योंकि पहले 'नाक़ाबिल' हैं और दूसरे सायन्सी और क़ाबिल हैं। लगातार दोहराते रहनेसे जनताको किसी भी बातपर विश्वास कराया जा सकता है। लेकिन अिस तरहका प्रोपेगैण्डा अिस हद तक पहुँच गया है कि आर्थिक व्यवस्था (माली निज़ाम) के माहिरोंमें भी अिन बेबुनियाद विचारोंने घर कर लिया है।

मिलोंको कअी तरहके फ़ायदे पहुँचाये जाते हैं। हम तो यहाँ तक कह सकते हैं कि अुन्हें पब्लिक खर्चकी मदसे पैसेकी मदद दी जाती है। गाँवके कारीगरोंको अुन करोड़ों रुपयोंसे शायद ही कोअी फ़ायदा पहुँचता हो, जो सरकार अुनसे वसूल करती है और पानीकी तरह बहा देती है। सायन्सी लेबोरेटरियोंमें की जानेवाली खर्चीली खोजोंसे अुनका कोअी वास्ता नहीं। अन्धाधुन्ध खर्च करके बनाअी गअी ग्राण्ड ट्रंक रोड जैसी बड़ी-बड़ी सड़कोंसे गाँववालोंको कोअी लाभ नहीं होता, अुलटे, वे अुनके बेनालके बैलोंको नुक़सान पहुँचाती हैं। कंकड़, तारकोल और सीमेण्ट-कांक्रीटकी सड़कोंकी बाजूमें बैल-गाड़ियों द्वारा अपनी अिच्छासे अिस्तेमाल किये जानेवाले कीचड़भरे रास्तोंको देखनेसे यह बात साफ़ जाहिर होती है। हथियारबन्द फ़ौजें कभी गाँवोंमें जानेकी तक़लीफ़ नहीं अुठातीं, हालाँकि वे शहरोंमें अक्सर देखी जाती हैं। फिर भी अिन फ़ौजोंका खर्च गाँवोंकी पैदावारसे ही चलता है! फ़सलके समय गाँववालोंके कच्चे मालको शहरोंमें खींच ले जाने और अुसे बढ़े हुअे दामोंमें अुनतक वापिस लानेके सिवा रेल-महकमा गाँववालोंकी ज़रूरतोंका कोअी खयाल नहीं करता। गाँवोंके अुद्योग-धन्धोंके रास्तेमें अितनी रुकावटें डाली जाती हैं; फिर भी अुनके बारेमें यह कहा जाता है कि वे कलकी दूसरोंके पैसेपर बढ़नेवाली मिलोंका मुक़ाबिला नहीं कर सकते।

अिन पुरानी मुसीबतोंके साथ कण्ट्रोलकी नयी मुसीबत और जुड़ गअी है जिसने गाँववालोंको कम नुक़सान नहीं पहुँचाया है। बिहारके अखिल भारत ग्राम-अुद्योग-संघके अेजण्टने लिखा है कि तिल, सरसों वग़ैराके बीजों और अुनके तेलोंको अेक सूबेसे दूसरे सूबेमें ले जानेपर लगी हुअी रोकको अुठा लेने और रेलवे-हाकिमोंकी अनोखी हरकतोंके कारण सूबेके बैल-घानीवालोंको बहुत नुक़सान हो रहा है। रेलें यू० पी० और पंजाबसे मिलोंमें निकाले हुअे तेल बड़ी मिक़दारमें यहाँ लाती हैं। अिससे तेलोंकी क़ीमत बहुत घट गअी है। लेकिन तिल, सरसों वग़ैराकी तंगी आज भी पहलेकी तरह बनी हुअी है, क्योंकि रेल-महकमा अुनके लिअे डिब्बे मुहैया करनेसे अिनकार करता है। अिन बीजोंके दाम बहुत चढ़ गये हैं और मिलोंमें निकाले गये तेलोंकी क़ीमत काफ़ी घट गअी है। रेलोंकी अिस अेक-तरफ़ा नीतिके कारण सूबेके बाहर सरसों २१ रुपये मन बिकती है, जब कि सूबेके भीतर अुसी क़िस्मकी सरसों ३० रुपये मनसे कममें नहीं मिलती। यह तंगी मालको अेक जगहसे दूसरी जगह लाने-लेजानेवाली रेलोंकी वजहसे पैदा हुअी है और बिहार-सरकार कहती है कि अिस मामलेमें वह कोअी सुधार नहीं कर सकती।

ये ही वे तरीक़े हैं, जिनके ज़रिये गाँवोंके अुद्योग-धन्धोंकी क़ुदरती ताक़त बरबाद की जा रही है, और जब वे अैसे तरीक़ोंसे हार मान लेते हैं, तो कहा जाता है कि गाँवोंके अुद्योग-धन्धे 'नाक़ाबलीयत'के कारण मिलोंका मुक़ाबला नहीं कर सकते।

अैसे फ़र्क़ों और तरफ़दारीको मिटानेके लिअे सही आँकड़े रखने चाहियें और मिलोंको फ़ायदा पहुँचानेवाले सारे पब्लिक खर्चकी रक़म मिलोंसे लाभ अुठानेवाले लोगोंपर टैक्स लगाकर अिकट्ठी की जानी चाहिये, न कि आम लोगोंपर लगाये जानेवाले टैक्ससे। अैसा करके ही हम अलग-अलग तरहकी पैदावारके बीच अिन्साफ़ क़ायम कर सकते हैं।

(अंग्रेज़ीसे)

जे० सी० कुमारप्पा

रेडियर-वज़ारत और खादी

मद्रासकी हालकी अेक अखबारी रिपोर्टमें बताया गया है कि रेडियर-वज़ारतने चरखेमें सुधार करनेके लिअे अेक खास रक़म अलग रख दी है। सच पूछा जाय तो यह अैलान जरा भी बढ़ावा देनेवाला नहीं है। प्रकाशम्-वज़ारतके दूसरे चाहे जो दोष रहे हों, लेकिन अिसमें कोअी शक नहीं कि अुसने गांधीवादी आर्थिक या माली योजनाके बारेमें देशके सामने बड़ी हिम्मतभरी मिसाल पेश की थी। हो सकता है कि श्री प्रकाशम्की कपड़ा-नीतिमें तफ़सीलकी कुछ बातें छूट गअी हों। लेकिन खादीकी छिपी हुअी ताक़तमें और खादी जिसका प्रतीक (निशानी) है, अुस समाजी-माली संगठनमें अुनकी सच्ची श्रद्धा थी। पूँजीपतियोंके क़ाबूमें रहनेवाले सारे अखबारोंने अुनकी कपड़ा-नीतिपर लगातार ज़ोरदार हमला किया, लेकिन वह चट्टानकी तरह अडिग रहे। मुझे मद्रास-वज़ारतके संकटके सियासी पहलूसे कोअी वास्ता नहीं। मेरा खयाल है कि प्रकाशम्-वज़ारतको अपनी कपड़ा-नीतिके कारण नहीं हटना पड़ा, हालाँकि दक्षिणके मेरे कअी दोस्तोंने मुझे बताया है कि श्री प्रकाशम्की खादी-योजनाकी वजहसे ही अुनके खिलाफ़ सियासी तूफ़ान अुठा था। सो जो कुछ भी हो, हमें आशा है कि श्री रेडियर जमे हुअे पूँजीवादी हितोंके दबावमें आकर खादीको धोखा नहीं देंगे। चरखेके लिअे खास रक़म अलग रखने और अुसके सुधारके लिअे अिनामोंका अैलान करनेका समय अब बीत चुका है। अगर रेडियर-वज़ारत सचमुच खादी और जगह-जगह फैले हुअे माली-विकासमें श्रद्धा (अेतक़ाद) रखती है, तो अुसे हिम्मतके साथ गाँवोंमें अुद्योग-धन्धे फैलानेकी नीतिपर अमल करना चाहिये। लेकिन अगर नयी वज़ारतकी गांधीवादी माली निज़ाम (व्यवस्था)में श्रद्धा न हो, तो अुसे चरखेपर अेक पाअी भी खर्च नहीं करनी चाहिये। सिर्फ़ गांधीजीको खुश करनेके लिअे अूपरी मनसे खादीकी तारीफ़ करना सरासर जनताको धोखा देना है।

अिस बारेमें अन्तरिम सरकारका रुख बहुत ज़्यादा रुकावट डालनेवाला साबित हुआ है। यह बड़े दुःखकी बात है। गांधीजीने कुछ ही महीने पहले मद्रास-सरकारको ज़ोरदार शब्दोंमें यह सलाह दी थी कि वह केन्द्रीय सरकारकी तरफ़से मिला हुआ तकुओंका कोटा न ले। लेकिन अन्तरिम सरकारने ज़ाहिर किया कि मद्रास-सरकारको सूबेके लिअे मुक़र्रर किये हुअे तकुओंके कोटेको रद्द करनेका कोअी हक़ नहीं है। अिस सवालकी क़ानूनी मुश्किलें चाहे जो हों, लेकिन मद्रासकी कपड़ा-नीतिके बारेमें अन्तरिम सरकारकी तरफ़से जो नौकरशाही जवाब मिले हैं, वे सचमुच ताज्जुबभरे और सदमा पहुँचानेवाले भी हैं। अब कांग्रेस क़ौमी-योजनाके बारेमें बग़ैर मक़सदकी कोअी नीति अख़्तियार नहीं कर सकती। हिन्दुस्तानके आर्थिक या माली विकासके लिअे अुसे अपनी निश्चित नीति ज़ाहिर करनी ही चाहिये। कांग्रेस वर्किंग कमेटीको चाहिये कि वह सूबोंकी कांग्रेसी सरकारोंको अिस बारेमें साफ़ प्रोग्राम दे। हर सूबेको अुद्योग-धन्धोंके विकाससे ताल्लुक़ रखनेवाले वक़ीरके खयालों और धुनके मुताबिक़ काम करनेकी छूट नहीं दी जानी चाहिये।

यहाँ मैं फिर अेक बार कह दूँ कि गांधीजी बड़े पैमानेपर माल तैयार करनेवाले हर अुद्योग-धन्धेके खिलाफ़ नहीं हैं। वे चाहते हैं कि देशके खास-खास बुनियादी धन्धे राष्ट्रकी मिल्कियत होने चाहियें। लेकिन लोगोंके रोज़ाना अिस्तेमालकी चीज़ें तैयार करनेवाले अुद्योगोंको ज़्यादा-से-ज़्यादा फैलाना चाहिये। पच्छिमी देशोंकी तरह अेक-केन्द्री तरीक़ेसे माल पैदा करनेके बजाय तन्दुरुस्ती देनेवाले वातावरणमें झोंपडियोंमें चलनेवाले लाखों छोटे-छोटे कारखानोंमें आम लोगों द्वारा माल पैदा किया जाना चाहिये। मुझे यहाँ तफ़सीलमें जानेकी ज़रूरत नहीं। जाननेकी अिच्छा रखनेवाले पाठक 'माली विकासके लिअे गांधीवादी योजना' नामकी मेरी छोटीसी किताब पढ़ सकते हैं। मैं देशके नेताओंसे आग्रहके साथ यह अपील करता हूँ कि वे माली विकासकी योजनाओंको

www.vinoba.in

आखिरी शकल देनेके पहले गांधीवादी माली व्यवस्थाको भलीभाँति आजमा लें। मुझे अिसमें जरा शक नहीं कि आजकी दुनियाको प्लेगकी तरह बरबाद करनेवाली कअी तरहकी माली बुराअियोंको दूर करनेका अेक यही रास्ता है कि देशके खास खास बुनियादी धन्धोंको राष्ट्रकी मिल्कियत बना दिया जाय और रोज़ाना अिस्तेमालकी चीज़ें पैदा करनेवाले ज़्यादातर अुद्योगोंको जगह-जगह फैला दिया जाय।

(अंग्रेज़ीसे) **श्रीमन्नारायण अग्रवाल**

हरिजनसेवक

१८ मअी १९४७

अभी चले जाओ!

[५ मअीके दिन गांधीजीने दिल्लीमें रहनेवाले रूटरके खास संवाददाता, मि० डून केम्पबेल द्वारा पूछे गये बहुतसे सवालोंके जवाब दिये थे। अुन जवाबोंका दायरा बहुत बड़ा है। अुनमें हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालतसे लेकर दुनिया तककी बातें आ जाती हैं। —**संपादक**]

सवाल—क्या हिन्दुस्तानका फ़िरक़ेवाराना या साम्प्रदायिक बँटवारा होना लाज़िमी है? क्या अैसे बँटवारेसे यहाँका फ़िरक़ेवाराना सवाल हल हो जायगा?

जवाब—मैंने निजी तौरपर हमेशा **नहीं** कहा है। आज भी अिन दोनों सवालोंका मेरा जवाब **नहीं** ही है।

स०—अगर हिन्दू-मुसलमानोंके बड़े-बड़े मत-भेद जून १९४८ तक न मिटे, तो अिखलाक़ी नज़रसे हिन्दुस्तानमें बने रहना अंग्रेज़ोंका फ़र्ज़ हो जायगा। क्या आप अिस रायकी ताअीद करते हैं?

ज०—यह सवाल मुझसे पहले कभी पूछा नहीं गया था। अंग्रेज़ १३ महीने यहाँ रहेंगे, तो हिन्दुस्तानको नुक़सान ही होगा। अिसलिअे अगर वे आज ही यहाँसे चले जायँ, तो ठीक होगा। न तो मैं ब्रिटिश-अैलानपर किसी तरहका शक करता हूँ और न वाअिसरायकी अिमानदारीमें मुझे कोअी शक है, फिर भी हक़ीक़तोंको तो नज़र-अन्दाज़ नहीं किया जा सकता।

न तो ब्रिटिश कैबिनेट और न वाअिसराय ही, फिर वह कितने ही होशियार और क़ाबिल क्यों न हों, हक़ीक़तोंको बदल सकते हैं। और, हक़ीक़तें ये हैं कि हिन्दुस्तानको हर बातके लिअे ब्रिटिश सत्ताका मुँह ताकना सिखाया गया है। अब हिन्दुस्तानके लिअे अिस हालतको अेकदम बदल देना मुमकिन नहीं। मैंने अिस दलीलको कभी नहीं माना कि अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तान छोड़नेकी तैयारीके लिअे १३ महीने चाहियें। अिस दरमियान हिन्दुस्तानकी सारी पार्टियाँ मददके लिअे ब्रिटिश कैबिनेट या वाअिसरायकी तरफ़ ताकती रहेंगी। हमने अंग्रेज़ोंको हथियारोंकी ताक़तसे नहीं हराया है। हिन्दुस्तान अपनी नैतिक ताक़तसे ही जीता है। अगर यह मान लिया जाय कि कही हुअी बातोंके अेक-अेक शब्दपर ब्रिटिश कैबिनेट अमल करेगी, तो बेशक, अंग्रेज़ोंका हिन्दुस्तान छोड़नेका फ़ैसला अितिहासमें ब्रिटिश क़ौमका सबसे शरीफ़ाना काम माना जायगा।

अैसी हालतमें, अगर ब्रिटिश सत्ता और ब्रिटिश फ़ौजें १३ महीने तक हिन्दुस्तानमें बनी रहीं, तो अुनसे मददके बजाय रुकावट ही पहुँचेगी। क्योंकि हिन्दुस्तानका हर आदमी मददके लिअे अुस फ़ौजी तंत्रकी तरफ़ आशाभरी निगाहसे देखता रहेगा, जिसे अंग्रेजोंने जनम दिया है। बंगाल, बिहार, पंजाब और सरहदी सूबेमें यही हुआ है। वहाँके हिन्दुओं और मुसलमानोंने ज़रूरत पड़नेपर यही कहा कि ब्रिटिश फ़ौजोंकी मदद ली जाय। यह बड़ी शर्मनाक बात है। हालाँकि पहले मैं अक्सर यह कह चुका हूँ, फिर भी मेरे दोहरानेसे अिस बातकी क़ीमत घटती नहीं, अुलटे, जब-जब मैं अिसे दोहराता हूँ, अिसकी क़ीमत और बढ़ जाती है।

हिन्दुस्तानकी यह हालत अिसलिअे है कि यहाँ देशवालोंकी हुकूमत नहीं रही। विदेशी हुकूमत जनतापर लादी गअी है। और जब वे खुद होकर लादी हुअी हुकूमतको हटाते हैं, तो मुमकिन है कि शुरूआतमें यहाँ कोअी भी हुकूमत न रहे। अगर हमने हथियारोंकी ताक़तसे विजय पाअी होती, तो मुमकिन है हिन्दुस्तानमें कोअी हुकूमत क़ायम हो जाती। मेरी रायमें आज जो फ़िरक़ेवाराना झगड़े आप यहाँ देखते हैं, अुनके लिअे अेक हदतक अंग्रेज़ोंकी मौजूदगी भी ज़िम्मेदार है। अंग्रेज़ यहाँ न होंगे, तब भी हम बेशक अिस आगके बीचसे गुजरेंगे। लेकिन वह आग हमें पवित्र बना देगी।

स०—आपके खयालमें जून १९४८ के बाद हिन्दुस्तान और ब्रिटेनके आपसी सम्बन्ध कैसे रहेंगे?

ज०—मेरे खयालमें ब्रिटेन और हिन्दुस्तानके आअिन्दा सम्बन्ध दोस्ताना ही रहेंगे। अैसा कहते वक़्त मैं यह बात मान लेता हूँ कि अपने अैलानके पीछे कोअी छिपा अर्थ रखे बिना अंग्रेज़ पूरी अिमानदारीके साथ हिन्दुस्तानको पूर्ण रूपसे छोड़कर चले जायँगे।

स०—क्या आअीन-सभा द्वारा तैयार किये जानेवाले आअीन या विधानमें छूतछात मिटानेकी जो धारा जोड़ी गअी है, वह अपने-आपमें कोअी बड़ा सुधार है?

ज०—नहीं। वह धारा कोअी बड़ा सुधार नहीं है। सच पूछा जाय तो वह सुधार ही नहीं है। वह धारा अिस बातकी सूचना देती है कि हिन्दू-समाजमें अेक बड़ा क्रान्तिकारी सुधार हुआ है। मैं यह क़बूल करता हूँ कि हिन्दुस्तानमें छूतछात अभी जड़से नहीं मिटी है। ब्रिटिश सम्बन्धके बुरे नतीजोंकी तरह बहुत पुरानी छूत-छातके नतीजे भी देखते-देखते नहीं मिट सकते। शायद बरसों बाद हिन्दुस्तानमें आनेवाला कोअी विदेशी यह कह सके कि यहाँ छूतछातका नाम भी नहीं है।

स०—क्या आपका विश्वास है कि मौजूदा संयुक्त राष्ट्र-संघ दुनियामें हमेशाके लिअे शान्ति क़ायम रख सकता है?

ज०—नहीं। मुझे डर है कि दुनिया दूसरे संकटकी तरफ़ ज़ोरोंसे बढ़ रही है। यह डर बहुतोंको परेशान कर रहा है। लेकिन अगर हिन्दुस्तानमें सब कुछ अच्छा हुआ, तो दुनियाको टिकाअू शान्ति मिल सकेगी। यह बहुत कुछ हिन्दुस्तानके रुखपर मुनहसिर है। और हिन्दुस्तानका रुख कैसा रहेगा, यह बहुत हद तक अंग्रेज़ोंकी सियासी अक़्लमन्दीपर निर्भर करता है।

स०—आपकी रायमें फ़िलस्तीनका सवाल कैसे हल होगा?

ज०—वह अैसा पेचीदा सवाल बन गया है, जो शायद कभी हल न हो सकेगा। अगर मैं यहूदी होता, तो फ़िलस्तीनके यहूदियोंसे कहता—'अपना मक़सद हासिल करनेके लिअे आतंक-वादका सहारा लेना बेवकूफ़ी है। क्योंकि अिस तरह हम अपनी बातको खुद नुक़सान पहुँचाते हैं। अगर हम आतंक-वादका सहारा न लें, तो हमारी हलचल जायज़ साबित हो सकती है।' अगर अुनका मक़सद सिर्फ़ सियासी सत्ता लेनेका हो, तो अुसकी कोअी क़ीमत नहीं। वे फ़िलस्तीनकी लालच क्यों करें? अुनकी जाति महान् है; अुनमें बड़े-बड़े गुण हैं। मैं अफ़्रीकामें बरसों यहूदियोंके साथ रहा हूँ। अगर यह अुनकी मज़हबी लालसा या ख्वाहिश हो, तो मज़हबमें यक़ीनन् आतंक-वादकी कोअी जगह नहीं। अुन्हें अरबोंसे मिलना चाहिये, अुनके दोस्त बनना चाहिये और जेहोवाकी मददके सिवा ब्रिटिश, अमेरिकन या दूसरी किसी मददके मुँहताज नहीं रहना चाहिये।

(अंग्रेज़ीसे)

www.vinoba.in

अेक साँसमें दो विरोधी बातें

मद्रासकी मौजूदा वज़ारत प्रकाशम्-वज़ारतके प्रोग्रामकी तरक़्क़ीकी तरफ़ ले जानेवाली बातोंको अेक-अेक करके खत्म करती जा रही है। नीचे दिया गया अैलान अुसकी मौजूदा कपड़ेकी नीतिपर शाया हुआ है—

"अप्रैल, १९४६में भारत-सरकारने जंगके बादकी तरक़्क़ी-योजनाके मुताबिक़ अिस सूबेके लिअे ३५२,००० (२००,००० मोटे और १५२,००० महीन) तकुअे देना तय किया था। ये तकुअे अिस सरकारकी सिफ़ारिशपर सूबेकी ९ मौजूदा और २५ नअी बननेवाली मिलोंको बाँटे गये थे। भारत-सरकारने अिन तमाम लोगोंको पूँजी जमा करनेकी अिजाज़त और बाहरसे माल मँगानेके लिअे लाअिसेन्स भी दे दिये थे। बहुतसे मिलवालोंने तो ज़रूरी अिमारतें बनवाना भी शुरू कर दिया है, शेयर बेचकर पूँजी अिकट्ठी कर ली है और मशीनोंके लिअे आर्डर भी दे दिये हैं। आज अिन मिलोंका काम काफ़ी आगे बढ़ चुका है।

बादमें जब मद्रासकी सरकारने सूबेमें हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीको बढ़ावा देनेकी स्कीम शुरू की, तो अुसने सोचा कि मिलोंके बढ़ जानेसे शायद खादीकी स्कीममें रुकावट पहुँचे। अिसलिअे अुसने कपड़ेकी मिलोंसे ताल्लुक़ रखनेवाली अपनी नीतिपर फिरसे विचार किया और अपने सूबेको मिला हुआ तकुओंका हिस्सा भारत-सरकारको वापिस कर दिया। मिलोंके अिन्तज़ाम करनेवालोंको, जिन्हें तकुओंका हिस्सा देना मंज़ूर किया जा चुका था, अिस बातकी अित्तिला दे दी गअी।

फिर भी भारत-सरकार मुक़र्रर किये हुअे हिस्सेको रद्द करनेके लिअे अिस वजहसे तैयार न हुअी कि अैसा करनेसे अुसपर विश्वासघातका दोष लगता और अुसे मुकदमेबाज़ीमें फँसना पड़ता। मद्रास सरकारने भारत-सरकारसे अपने फ़ैसलेपर दुबारा विचार करनेका आग्रह किया, लेकिन भारत-सरकारने अपने पहले फ़ैसलेको फिर दोहरा दिया। भारत-सरकारके अिस रुखको देखते हुअे सूबेकी मौजूदा सरकारने अिस पूरे सवालपर बड़ी फ़िक्रके साथ ग़ौर किया। यह सरकार महसूस करती है कि अिखलाक़ी और क़ानूनी वजहोंसे अुसे सूबेको मिले हुअे तकुओंके हिस्सेको वापिस करनेकी ज़िद्द नहीं करनी चाहिये। अिसीलिअे सूबेकी सरकारने भारत-सरकारसे मिले हुअे तकुओंको वापिस न करनेका तय किया है।

अिस बारेमें सरकार यह बात बिलकुल साफ़ कर देना चाहती है कि सूबेको दिये गये तकुओंके कोटेको मंज़ूर कर लेनेका मतलब यह नहीं है कि वह खादी-स्कीमसे दूर जा रही है। चुने हुअे ७ 'फिरकों'में खादीकी पैदावार बढ़ानेका काम पहले ही शुरू कर दिया गया है और अुसे २७ दूसरे 'फिरकों'में जल्दी ही फैलानेकी तजवीज़ पेश की जा चुकी है। अखिल भारत चरखा-संघसे सलाह-मशविरा करके तैयार की हुअी अिस स्कीमपर पूरे जोशके साथ अमल किया जायगा, जिससे दिल्लीमें ९ अस्तूबर, १९४६को चरखा-संघ द्वारा पास किये गये ठहरावोंको अमली रूप मिलेगा।

हम यह जानना चाहेंगे कि वे "अिखलाक़ी और क़ानूनी कारण" क्या हैं, जिन्होंने मौजूदा मद्रास-सरकारको सूबेके सरमायादारोंको फ़ायदा पहुँचानेवाला क़दम अुठानेके लिअे मज़बूर कर दिया है। अूँची भावनाओंको अपील करना हमेशा तारीफ़के लायक़ माना गया है, लेकिन अैसी अपील कहाँ तक जायज़ है, यह साफ़ कर दिया जाना चाहिये।

अिस खास मिसालमें अिखलाक़ी या नैतिक कारण सरकार द्वारा अपने शहरियोंको दिये गये वचनकी पवित्रता ही है। लेकिन, अगर अैसे वचनको निबाहनेसे जनताकी भलाअीको नुक़सान पहुँचे, तो राजका यह फ़र्ज़ है कि वह बग़ैर सोचे-समझे दिये हुअे वचनको वापिस ले ले और ज़रूरत पड़े तो नुक़सान अुठानेवाले शहरियोंको हरजाना भी दे। आखिरकार, अिन मामलोंमें दुनियावी नज़रसे ही विचार किया जाता है—वह भी माली नज़रसे। कोअी भी मिल-मालिक अपनी आध्यात्मिक या रूहानी तरक़्क़ी या आत्माकी पवित्रताके लिअे मिल नहीं चलाता। अिसलिअे अुसके नुक़सानकी आसानीसे भरपाअी की जा सकती है। अैसा रास्ता हर तरहकी क़ानूनी ज़रूरतोंको भी पूरा करेगा। अगर दूसरी क़ानूनी रुकावटें पैदा हों तो अुन्हें भी ज़िन्दगीकी रोज़मर्राकी ज़रूरतोंसे मैल बैठानेके लिअे बदल देना होगा; क्योंकि न तो वे मीड और परसियावालोंके कभी न बदलनेवाले क़ानूनोंकी तरह अचल हैं और न स्वर्गसे लाअी गअी पट्टियोंपर लिखे हुअे हैं। वे मामूली अिन्सानोंके ही तो बनाये हुअे हैं।

अिसके अलावा, भारत-सरकारका १९३५ वाला अेक्ट, जिसका यह दावा है कि कपड़ेकी मिलोंकी व्यवस्था मरकज़ी सरकारका विषय है, अगले साल बेकार हो जायगा, जब अंग्रेज़ हिन्दुस्तान छोड़ देंगे। कपड़ेकी नीति लम्बे वक़्तकी चीज़ है। अिसलिअे जो अेक्ट विधानकी किताबसे कुछ ही महीनोंमें हटा दिया जाने वाला है, अुसे हमारी आअिन्दा योजनाओंपर कोअी असर नहीं डालने देना चाहिये।

अिसलिअे मद्रास-सरकारके अैलानमें जो कारण दिखाये गये हैं, वे सही और विश्वासके लायक़ नहीं हैं। वह खादी-प्रोग्रामके साथ-साथ नअी मिलें खोलने और मौजूदा मिलोंको बढ़ानेकी हिमायत करता है। लेकिन ये दोनों बातें अेक-दूसरीके बिलकुल खिलाफ़ हैं। ये दोनों योजनाअें अेक साथ नहीं पनप सकतीं। अगर मद्रासकी वज़ारत मिल-मालिकोंके अिशारेपर नाचना चाहती है, तो बहानेबाज़ीका सहारा न लेते हुअे अैसा अुसे खुलेआम और पूरे दिलसे करना चाहिये।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

गांधीजीका अख़बारी बयान

जोहान्सबर्गमें यूनियनकी नसली पाबन्दियोंपर चर्चा करनेके लिअे दक्खिनी अफ्रीकाके यूनियनके सारे गैर-यूरोपियन नसलवालोंकी रैली होनेवाली है। अुस मौक़ेपर मेरा सन्देश हासिल करनेके लिअे ट्रान्सवाल अिण्डियन कांग्रेसके ऑनरेरी सेक्रेटरी सेठ कछालियाने अेक समुन्दरी तार भेजा है। यह सवाल बड़ा पेचीदा और चकरा देनेवाला है। जहाँ तक सिर्फ़ हिन्दुस्तानियोंकी पाबन्दियोंका ताल्लुक़ है, यह सवाल काफ़ी पेचीदा है। लेकिन अगर अिस हलचलमें दूसरी नसलोंके लोगोंको शरीक किया जाता है—जो दलीलोंके आधारपर सही मालूम होता है—और अूँचा दरज़ा क़ायम रखकर यह लड़ाअी, मज़बूतीके साथ, सचाअी और अहिंसाकी बुनियाद पर नहीं लड़ी जाती, तो यह सवाल खतरनाक बन जाता है। मैं रैलीका अिन्तज़ाम करनेवालोंको आगाह कर देना चाहता हूँ कि वे लम्बी-चौड़ी तक़रीरें करने या झूठी आशाअें बाँधनेसे बचें और शान व पाबन्दीके साथ अपना प्रदर्शन करें। अिसमें किसीको ज़रा शक नहीं करना चाहिये कि दुनियाके सारे चूसे और दबाये हुअे लोगोंकी और, अिसलिअे, सारी दुनियाकी मुक्ति अुस सिक्केपर ही पूरी तरह निर्भर करती है, जिसकी अेक तरफ़ सत्य और दूसरी तरफ़ अहिंसा बड़े-बड़े हरूफ़ोंमें लिखा है। साठ सालके तजरबेने मुझे अिसके सिवा दूसरा कोअी तरीक़ा नहीं सिखाया है।

(अंग्रेज़ीसे) नअी दिल्ली, ५-५-'४७

www.vinoba.in

गांधीजीकी दिल्लीकी डायरी

१–५–'४७

आज शामकी प्रार्थना-सभामें पूरी खामोशी थी। गांधीजीने लोगोंको अुनके अिस आदर्श ब्योहारके लिअे धन्यवाद दिया।

गांधीजीने कहा कि पिछली बार जब मैं दिल्लीसे पटना गया था, तब बीचके स्टेशनोंपर लोगोंने बिलकुल शोर-गुल नहीं किया। मुझे लगा कि दिल्लीकी प्रार्थना-सभाओंमें आप लोगोंने जो खामोशी रखी, मानो अुसीका असर पटना तकके मेरे सफ़रपर पड़ा हो! सिर्फ़ मेरे बिहार पहुँचनेपर थोड़ा शोर-गुल हुआ था। मगर अिस बारके सफ़रमें लोग खामोशीका सबक़ भूल गये। अुन्हें शायद याद नहीं रहा कि ज़ोरकी आवाज़ मुझसे सही नहीं जाती। अिसलिअे भीड़के द्वारा ज़ोर-ज़ोरसे लगाये गये नारोंसे मुझे बड़ी तकलीफ़ अुठानी पड़ी। मुझे अुम्मीद है कि सब जगहोंके कांग्रेसी कार्यकर्त्ता लोगोंको डिसिप्लिन या निज़ामकी सीख देंगे।

अिसके बाद गांधीजीने सरहदी सूबे, पंजाब और दूसरी जगहोंपर होनेवाली ख़ूँरेज़ीका ज़िक्र करते हुअे कहा कि सभामें आये हुअे लोग पूछ सकते हैं कि आपने और क़ायदे आज़मने मिलकर देशसे शान्तिकी अपील की और अुसमें यह अैलान कर दिया कि सियासी मक़सद हासिल करनेके लिअे किसी भी वक़्त ज़ोर-ज़बरदस्तीसे काम न लिया जाय, फिर भी देशमें जहाँ-तहाँ अिससे बिलकुल अुलटा हाल क्यों देखनेमें आता है? अुस अपीलका मक़सद तो ज़रा भी पूरा होता नहीं दीखता? मेरी रायमें अिसमें वाअिसरायकी, जिनकी कोशिशसे यह मिली-जुली अपील निकाली गअी थी, और क़ायदे आज़मकी अिज़्ज़तका सवाल है। जिन्ना साहब यह दलील नहीं दे सकते कि अुनके अनुयायियोंने अुनकी अपीलपर ध्यान नहीं दिया। वे अखिल भारत मुस्लिम लीगके सर्वमान्य प्रेसिडेण्ट हैं, जो मुसलमानोंकी बहुत बड़ी तादादकी नुमाअिन्दगीका दावा करती है। अगर क़ायदे आज़म अैसी दलील देते हैं, तो वे अपने हाथों अपना दावा खत्म करते हैं। अगर अपना सियासी मक़सद — पाकिस्तान — हासिल करनेके लिअे मुसलमान हिंसाका सहारा लेते हैं, तो फिर लीगकी सत्ता कहाँ रही? क्या ब्रिटिश सरकार बुद्धिकी ताक़तके सामने झुकनेके बजाय हथियारोंकी ताक़तके सामने झुकेगी? जब तक अपीलमें अिस्तेमाल किये गये शब्द दोनों दस्तख़त करनेवालोंके लिअे सचमुच अपना असली और अेक-सा मतलब नहीं रखते, तब तक मिली-जुली अपील निकालनेमें मुझे कोअी समझदारी नज़र नहीं आती।

२–५–'४७

रोज़ानाकी तरह आज भी गांधीजीकी प्रार्थना-सभा खामोशीके साथ शुरू हुअी। लेकिन जब क़ुरानकी आयत पढ़ी जा रही थी, तब भीड़मेंसे अेक आदमी अुठकर चिल्लाया — 'क़ुरान पढ़ना बन्द करो। हिन्दू-धर्मकी रक्षा करो।' पुलिसवाले अुसे बाहर ले जाने लगे, मगर गांधीजीने अुसी वक़्त प्रार्थना बन्द कर दी और गिरफ़्तार करनेवाले सिपाहीसे अुसको छोड़ देनेकी विनती की। अुन्होंने कहा कि जहाँ अेक आदमीको क़ुरानकी आयत पढ़नेके लिअे अेतराज़ करनेपर गिरफ़्तार किया गया हो, अुस जगह प्रार्थना करनेमें मुझे शर्म मालूम होती है। अगर मेहतर लोग मुझसे यह जगह छोड़कर चले जानेके लिअे कहें, तो मैं चला जाअूँगा। अुस हालतमें मैं ट्रस्टियोंकी राय जाननेके लिअे भी नहीं रुकूँगा, क्योंकि आखिरकार वे भी तो मेहतरोंके ही ट्रस्टी हैं।

प्रार्थनामें क़ुरानकी जो आयत पढ़ी जाती है वह अेक बड़ी शक्तिशाली प्रार्थना है, जिसमें ख़ुदा या भगवान्‌की स्तुति की गअी है। अगर अरबी ज़बानमें प्रार्थना की जाय, तो अुससे हिन्दू-धर्मको कैसे नुक़सान पहुँच सकता है? जो अैसी बात कहता है, वह न तो अपने मज़हबको जानता है, न अपने फ़र्ज़को। यह प्रार्थना तो हिन्दू-मन्दिरमें भी की जा सकती है। अेक दोस्तने मुझसे कहा था कि यजुर्वेदमें भी अिसी मतलबकी अेक प्रार्थना है। जिन लोगोंने हिन्दू धर्मशास्त्रोंको पढ़ा है, वे जानते हैं कि १०८ अुपनिषदोंमें अेक अुपनिषद् अैसा है, जिसका नाम 'अल्ला-अुपनिषद्' है। अुसे लिखनेवाला आदमी क्या अपने मज़हबसे वाक़िफ़ नहीं था? कहा जाता है कि अपनी मज़हबी यात्राके दरमियान गुरु नानक ख़ुद सत्यकी तलाशमें अरब गये थे।

गांधीजीने आगे कहा कि जब तक किसी मज़हबके माननेवाले अुसके लिअे तक़लीफ़ें न अुठायें, तब तक वह ज़िन्दा नहीं रह सकता। किसी अक़ीदे (श्रद्धा) की ताक़त तभी बढ़ती है, जब लोग अुसके लिअे अपनी जान देनेको तैयार रहें। ज़िन्दगीका दरख़्त अुसके शहीदोंके ख़ूनसे सींचा जाता है, जो अपने विरोधियोंको मारे बिना या अुनको किसी क़िस्मका नुक़सान पहुँचानेका अिरादा रखे बिना अपनी जान क़ुरबान कर देते हैं। हिन्दू-धर्म अिसी बुनियादपर खड़ा है और दुनियाके दूसरे मज़हबोंकी जड़में भी यही बात है।

जो दृश्य आपने अभी देखा, वह अुस रोगकी निशानी है, जिसने हिन्दुस्तानको जकड़ रखा है। आज देशमें चारों तरफ़ ग़ैर-रवादारी, बेसब्री, और बदलेकी भावना छायी हुअी है। आम लोगोंको फ़ौजमें लाज़िमी तौरपर भरती करनेकी बात भी सोची जा रही है। भगवान् करे हिन्दुस्तान कभी फ़ौजी मुल्क न बने! अगर अैसा हुआ, तो यह दुनियाकी शान्तिके लिअे अेक ख़तरनाक बात होगी। फिर भी, अगर जैसी बातें आज हो रही हैं, वैसी ही आगे भी होती रहीं तो हिन्दुस्तानके लिअे और अिस वजहसे सारी दुनियाके लिअे क्या अुम्मीद रह जाती है? क्या लोगोंमें दहशत पैदा करके पाकिस्तान हासिल किया जायगा, जैसा कि सरहदी सूबे, पंजाब, सिंध और दूसरी जगहोंपर दिखाअी दे रहा है? कुछ लोग कहते हैं कि पाकिस्तान बन जानेपर सब कुछ ठीक हो जायगा और मुसलमानोंकी ज़्यादा तादादवाले सूबोंमें ग़ैर-मुसलमानोंको मुसलमानोंसे बढ़कर नहीं, तो अुनकी बराबरीके हक़ तो दिये ही जायँगे। लेकिन जब तक पाकिस्तान क़ायम नहीं होता, तब तक अगर मुसलमानोंको अिससे अुलटी बात सिखलायी गयी, तो यह अेक अैसा सपना है जो कभी सच नहीं होगा। क्योंकि पाकिस्तान बन जानेके बाद मुसलमानोंसे यह अुम्मीद नहीं की जा सकती कि वे आजसे ज़्यादा अच्छे बन जायँगे। क़ायदे आज़म और अुनके सिपहसालारोंका यह फ़र्ज़ है कि वे जिन सूबों या हिस्सोंमें पाकिस्तान बननेकी बात हो रही है, वहाँके कम तादादवालोंके दिलोंमें विश्वास पैदा करें। तब पाकिस्तान और बँटवारेका अुन्हें कोअी डर नहीं रह जायगा।

बिहारकी जंगली वारदातोंका हवाला देकर, मुस्लिम बहुमतवाले सूबोंमें होनेवाली ज़ालिमाना वारदातोंकी ताअीद करनेसे काम नहीं चलेगा। बिहारके वज़ीरोंने हिन्दुओंके बुरे कामोंके लिअे अुसी वक़्त माफ़ी माँगी थी। जहाँ तक मैं जानता हूँ, वहाँ मुसलमानोंपर किये गये ज़ुल्मोंको कम करके दिखानेकी अुन्होंने कभी कोशिश नहीं की और बिहारके कअी हिस्सोंमें लोगोंने जल्दी ही अपने कियेपर जिस तरह पछतावा ज़ाहिर किया, अुसका मैं गवाह हूँ। मुझे पूरी अुम्मीद है कि बिहारके हिन्दुओंका यह रवैया आगे भी जारी रहेगा। अपनी हिफ़ाज़तके लिअे वाअिसराय और अंग्रेज़ी फ़ौजोंका मुँह ताकनेमें आपको शर्म आनी चाहिये। अिसका ख़याल करना भी अपने-आपको नीचे गिराना है।

३–५–'४७

आज शामकी प्रार्थना-सभामें भी क़ुरान शरीफ़की आयतके पढ़े जानेपर किसीने धीमी आवाज़में अेतराज़ किया और रोज़ानाकी तरह गांधीजीने प्रार्थना बन्द कर दी। अैसा करते हुअे गांधीजीने कहा कि कलसे मैं क़ुरानकी आयतसे ही अपनी प्रार्थना शुरू करूँगा। अभी तक मैं बौद्धमंत्र 'नम्यो' से प्रार्थना शुरू करता था। कअी साल पहले अेक जापानी सन्त सेवाग्राम-आश्रममें अिस प्रार्थनाको बड़े सवेरे गाया करते थे। अुन्हींसे लेकर मैंने अिसे अपनी प्रार्थनामें शामिल किया है। गांधीजीने कहा कि ३००० आदमियोंके लिअे यह पूरी तरह मुमकिन है कि वे अेतराज़ करनेवाले अेक आदमीपर क़ाबू करके प्रार्थना जारी रखें, मगर यह बिलकुल ग़लत चीज़ होगी। आप लोग यहाँ

www.vinoba.in

भगवान्‌से प्रार्थना करनेके लिअे अिकट्ठा हुअे हैं, किसीको डरा-धमकाकर क़ाबूमें करनेके लिअे नहीं । जिस शख़्सने अेतराज़ करनेकी बेवकूफ़ी की है, अुसे समझना चाहिये कि अगर मेरा मन क़ुरानकी आयतकी भावनासे भरा है, तो कोअी ताक़त मुझे अुसके पढ़नेसे सचमुच रोक नहीं सकती, क्योंकि सच्ची प्रार्थना दिलसे पैदा होती है । वह दरअसल मुँहसे बोले हुअे शब्दोंपर मुनहसिर नहीं रहती । अिसी तरीक़ेसे हिन्दू-धर्म बचाया जा सकता है, झगड़ा करनेसे नहीं । अैसे बरतावसे सहिष्णुता या रवादारीकी बेहद कमी ज़ाहिर होती है । यह हिन्दू-धर्मके लिअे शर्मनाक और किसी भी मज़हबके नामको लजानेवाली चीज़ है । आपके लिअे यही क़ुदरती और ठीक बात है कि आप हरअेक मज़हबमेंसे अुसकी हीरे जैसी क़ीमती बातें चुन लें और अुन्हें अपनी बनाकर ज़िन्दगीमें अुनपर अमल करें ।

गांधीजीने फिर अेक बार सभाके लोगोंका ध्यान हिन्दुस्तानकी मौजूदा दर्दनाक हालतकी तरफ़ खींचा । अुन्होंने कहा कि सारी दुनियाकी, खासकर अेशिया और अफ्रीकाकी, आँखें हिन्दुस्तान पर लगी हुअी हैं। अेशियाअी कान्फरेन्समें मैंने यह बात जान ली थी । सामराजवादका रास्ता पकड़नेसे जापान सही रास्ता नहीं दिखा सका, और आज अुसकी क्या हालत है ? हिन्दुस्तानने ब्रिटेनपर अिखलाक़ी जीत पाअी है, क्योंकि वह अहिंसक तरीक़ेसे लड़ा है । अिसीलिअे अेशियाके सारे देश हिन्दुस्तानसे सच्ची रहनुमाअीकी आशा रखते हैं । हरअेक हिन्दुस्तानीका यह फ़र्ज़ है कि वह अेशियाकी अिन आशाओंको झूठ साबित न होने दे। अगर हिन्दुस्तान, अेशिया और अफ्रीकाको सही रास्ता दिखा सका, तो दुनियाकी शकल ही बदल जायगी । जिस तरह बाढ़ (यहाँ आज़ादीकी शकलमें) आनेपर अूपरका पानी गन्दा और मट-मैला हो जाता है और बाढ़ अुतरनेपर फिर साफ़ व शान्त बहने लगता है, अुसी तरह मुझे आशा है कि आजकी फ़िरक़ेवाराना लड़ाअी बन्द हो जायगी और सारी बुराअियाँ खत्म हो जायँगी ।

अिसके बाद गांधीजीने दिल्लीके अेक अगुआ अखबारकी कड़े शब्दोंमें शिकायत की, जिसने आज वाअिसरायके अिरादों और कांग्रेस वर्किंग कमेटीके ठरावोंके बारेमें अिधर-अुधरसे जानी हुअी बातोंको छापकर अुनके बारेमें भविष्यवाणी करनेकी कोशिश की । अुन्होंने कहा कि यह तरीक़ा अखबारनवीसीको गिरानेवाला है । मैं खुद बरसोंसे अखबारनवीस रहा हूँ । अिसलिअे मैं अधिकारके साथ कह सकता हूँ कि अच्छी अखबारनवीसीकी क्या परम्परा होनी चाहिये । वाअिसरायके दिलमें जो बात है, अुसे ज़ाहिर करना अुनका काम है। कांग्रेस वर्किंग कमेटीने जो ठहराव पास किये हैं, अुन्हें अखबारोंमें देना प्रेसिडेण्ट या सेक्रेटरीका काम है । अिधर-अुधरसे छोटी-मोटी खबरें अिकट्ठा करके जनतामें सनसनी फैलानेके लिअे अुन्हें बढ़ा-चढ़ा कर छाप देना अखबारोंकी शानके खिलाफ़ है । अिससे वे अपने ही पाँवपर कुल्हाड़ी मारते हैं । यह जनताको गुमराह बनाता है और मक़सदको नुक़सान पहुचाता है । कुछ विदेशी अखबारोंकी बुरी मिसालपर चलना ग़लत चीज़ है । हिन्दुस्तानी अखबारनवीसोंको बिक्री बढ़ाने या खास खबरें फैलाकर शोहरत पानेके लिअे बुरी बातोंकी नक़ल नहीं करनी चाहिये । अक़लमदी और अिज़्ज़तका यह तकाजा है कि हर आदमी दूसरोंकी वही बात ले या अुनकी अुसी बातकी नक़ल करे, जो अच्छी और फ़ायदेमन्द हो ।

गांधीजीने कहा कि ब्रिटिश कैबिनेटने अपने सबसे अच्छे आदमीको वाअिसराय बनाकर हिन्दुस्तान भेजा है । वह सैनिक और राजनीतिज्ञ (सियासी माहिर) हैं । वह ब्रिटिश सरकारके शरीफ़ाना फ़ैसलेको अमली रूप देनेके लिअे आये हैं। जब तक नये वाअिसराय अपने कामोंसे हमारा विश्वास नहीं खोते, तब तक अुनमें भरोसा न करना या अुनपर बेअीमानीका अिलज़ाम लगाना बिलकुल ग़लत होगा। मैं सारे अखबारनवीसोंसे दिली अपील करता हूँ कि वे अिस नाजुक मौक़ेपर अपने अूँचे अुसूलोंका खयाल रखें । अगर वे अैसा नहीं कर सकते, तो बेहतर होगा कि सारे अखबार बन्द कर दिये जायँ । झूठकी कमी ताअीद नहीं की जा सकती और बुरी अखबारनवीसी मक़सदको अपार नुक़सान पहुँचाती है ।

४–५–'४७

गांधीजीने अपनी योजनाके मुताबिक प्रार्थना शुरू होनेके पहले पूछा कि प्रार्थना-मैदानमें कोअी क़ुरानकी आयतपर अेतराज़ लेनेवाले हैं ? अेक अकेली आवाज़ आअी — 'हाँ ।' गांधीजीको यह सोचकर दुःख हुआ कि अेक आदमीकी बेवक़ूफ़ीसे हज़ारोंको सामूहिक प्रार्थनाके रससे वंचित रहना पड़ेगा । लेकिन अुन्होंने दोहराया कि अेक आदमीको भी डराकर झुकाना अहिंसाकी भावनाके खिलाफ़ है । अिसलिअे आप सब अपनी आँखें मूँद लें और दो मिनट तक खामोश प्रार्थना करनेमें मेरा साथ दें । अिस मौनके दरमियान आप अपने दिलोंमें भगवान — वह भगवान जो अनन्त, अपार और जाना न जा सकनेवाला है और जिसके लाखों नाम हैं — का नाम पाक नीयतसे बसालें और अुस गुमराह नौजवान पर गुस्सा न हों, जिसने आज फिर प्रार्थना बन्द करा दी है ।

गांधीजीने लोगोंसे कहा कि आज वाअिसरायसे मेरी डेढ़ घण्टे तक बातचीत हुअी । अुन्होंने अखबारोंकी गुमराह करनेवाली रिपोर्टों और सुरखियों (पहली सतरों) की शिकायत की । वाअिसरायने मुझसे कहा कि वे शान्त तरीक़ेसे हिन्दुस्तानियोंके हाथमें सत्ता सौंपनेके लिअे हिन्दुस्तान आये हैं । ३० जून, १९४८ तक यहाँसे ब्रिटिश हुकूमतकी सारी निशानियाँ खत्म हो जायँगी । अुनकी यह दिली खाहिश है कि हिन्दुस्तानमें अेका क़ायम हो और सब जातियोंके लोग अेक-दूसरेके साथ हिल-मिलकर रहें । वे चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी पुरानी बातोंको भूल जायँ और हिन्दुस्तान छोड़नेके पहले, हो सके तो, हिन्दुओं और मुसलमानोंमें समझौता करानेकी अंग्रेज़ोंकी अीमानदार अिच्छामें विश्वास रखें । वाअिसरायने कहा कि अगर फ़िरक़ेवाराना लड़ाअी चलती रही, तो हिन्दुस्तान या ब्रिटेनकी साख अुठ जायगी । वाअिसराय जल-सेनाके अेक मशहूर कमाण्डर हैं और अिसलिअे अहिंसामें विश्वास नहीं रखते । फिर भी अुन्होंने बार-बार मुझे अिस बातका यक़ीन दिलाया कि वे अीश्वरमें श्रद्धा रखते हैं और हमेशा अन्तरात्मा या ज़मीरकी पुकारके मुताबिक काम करनेकी कोशिश करते हैं । अिसलिअे मैं हरअेकसे यह बिनती करता हूँ कि कोअी अुनके काममें रुकावट न डाले । अगर ब्रिटिश हुकूमतके खत्म होनेके अरसेमें वाअिसरायकी अुम्दा कोशिशोंके बावजूद फ़िरक़ेवाराना लड़ाअी चलती रही, तो वे न चाहनेपर भी फ़ौजका अिस्तेमाल करनेमें किसी तरह हिचकिचायेंगे नहीं । हालाँकि हिन्दुस्तानमें अमन और निज़ाम क़ायम रखनेकी ज़िम्मेदारी अन्तरिम सरकारकी है, फिर भी जब तक हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश फ़ौजें मौजूद हैं, तब तक अमन और निज़ामके लिअे वे अपनेको भी कम ज़िम्मेदार नहीं मानते । वाअिसरायने मेरे साथ बड़ी सभ्यता और अीमानदारीसे बात की । अुन्हें लगता है कि अगर देशकी सारी जातियाँ और पार्टियाँ अुनकी अीमानदारीमें विश्वास रखें और आम मक़सद तक पहुँचनेमें अुन्हें मदद करें, तो अुनका मुश्किल काम आसान बन जायगा ।

गांधीजीने कलकी बात आज भी दोहराते हुअे कहा कि जब तक वाअिसराय अपने कामसे हमारे विश्वासको नहीं तोड़ते, तब तक हमें अुनकी अीमानदारीमें विश्वास रखना चाहिये ।

अगर हिन्दू और मुसलमान आपसमें लड़ते रहे, तो अिसका मतलब होगा कि वे अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तानसे निकालना नहीं चाहते । अगर हिन्दू और मुसलमान जानवरोंकी तरह बरताव करते रहें, तो भी मुझे अिस बातमें ज़रा शक नहीं कि ३० जून, १९४८ तक अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तान छोड़कर चले ही जाना चाहिये ।

आज देशमें अन्न और कपड़ेकी तंगी मुँह बाये खड़ी है । वह हिन्दुओं, मुसलमानों और दूसरोंके लिअे समान है । अगर वे अक़लमन्दीसे अेक-दूसरेके दोस्त बन जायँ, तो वे लाखों-करोड़ों भूखों और नंगोंको अन्न और कपड़ा दे सकते हैं । अैसा करना अुनका फ़र्ज़ है ।

www.vinoba.in

आज सुबह मेजर जनरल शाहनवाज़ मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने बिहारके अेक गाँवके बारेमें मुझे बताया कि वहाँके हिन्दू पहले नहीं चाहते थे कि भागे हुअे मुसलमान वापस लौट आवें। लेकिन अब अुन्होंने अिस बातका यक़ीन दिलाया है कि वे लौटकर आनेवाले मुसलमानोंका स्वागत करेंगे। गाँववालोंने अपने हाथों रास्ते साफ़ किये और टूटे हुअे मकानोंकी मरम्मत की। आख़िरकार, जहाँ-जहाँ फ़िरक़ेवाराना पागलपनका राज क़ायम हो गया था, वहाँके बदनसीब लोग सिर्फ़ यही तो चाहते हैं कि अुनपर .जुल्म ढानेवाले लोग अुनके साथ प्रेम और समझसे पेश आयें। बिहारके अिन हिन्दुओंका यह काम और अिस तरहके सारे काम आज देशमें चारों तरफ़ छाये हुअे अंधेरेमें प्रकाशकी तरह हैं।

गांधीजीने आगे चलकर कहा कि अगर शान्तिकी मिली-जुली अपीलपर क़ायदे आज़मने अीमानदारीसे दस्तखत किये हों, तो सरहदी सूबे और पंजाबकी अराजकता और .जुल्म बन्द हो जायँगे।

६-५-'४७

चूँकि गांधीजी क़ायदे आज़मके पाससे लौटे नहीं थे, अिसलिअे अुनकी ग़ैर-मौजूदगीमें प्रार्थना ६॥ बजे शुरू हुअी। आज फिर अेक शख़्सने .कुरानकी आयत पढ़नेपर अेतराज़ किया, अिसलिअे सभामें आये हुअे लोग दो मिनटकी खामोशीके सिवा और कुछ न पा सके।

कलका मौसिम तूफ़ानी होनेसे गांधीजीकी लिखी चीज़ नहीं पढ़ी जा सकी थी। अिसलिअे अुनकी ग़ैर-मौजूदगीमें वह आज पढ़ी गअी—

"शैतानसे बचनेके लिअे मैं .खुदाकी शरणमें जाना चाहता हूँ। अै .खुदा! मैं हर काम तेरा नाम लेकर शुरू करता हूँ। तू दयालु और रहमदिल है। तूने यह दुनिया बनाअी है। तू सबका मालिक है। मैं सिर्फ़ तेरी ही तारीफ़ करता हूँ और तेरी ही मदद चाहता हूँ। क़यामतके दिन तू ही अिन्साफ़ करेगा।

"तू मुझे सही रास्ता दिखा, वह रास्ता जिसपर तेरे भक्त चले हैं। मुझे अुन लोगोंके बुरे रास्तेसे बचा, जिन्होंने तुझे नाराज़ किया है।

".खुदा अेक है। वह अनादि, अनन्त और सर्व-शक्तिमान् है। अुसके बराबर दूसरा कोअी नहीं है। अुसने दुनियाकी सब चीज़ें बनाअी हैं। लेकिन अुसे किसीने नहीं बनाया।"

गांधीजीने कहा कि यह .कुरान शरीफ़की अुन आयतोंका तरजुमा है, जो प्रार्थनामें रोज़ पढ़ी जाती हैं। मुझे समझमें नहीं आता कि अिनके पढ़नेपर कोअी अेतराज़ कैसे ले सकता है? मैं मज़बूतीके साथ कह सकता हूँ कि अिस प्रार्थनाको अपने दिलोंमें बसाकर आप अूँचे अुठेंगे और बेहतर मर्द और औरत बनेंगे।

७-५-'४७

क़ायदे आज़म जिन्नासे हुअी अपनी कलकी मुलाक़ातका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने आज भंगी-बस्तीकी प्रार्थना-सभामें कहा कि हमारी बातचीत दोस्ताना ढंगसे हुअी, हालाँकि हिन्दुस्तानके बँटवारेके सवालपर हम दोनोंमें कोअी समझौता नहीं हो सका। मैं बँटवारेका खयाल भी गवारा नहीं कर सकता, और जब तक मुझे यह विश्वास है कि हिन्दुस्तानका बँटवारा ग़लत चीज़ है, तब तक मैं अुसकी योजनापर दस्तखत नहीं कर सकता। मेरी रायमें अिससे सिर्फ़ हिन्दुओंको ही नहीं, मुसलमानोंको भी अेकसा नुक़सान होगा।

गांधीजीने आगे कहा कि जहाँ सारे हिन्दुस्तानका सम्बन्ध हो, वहाँ मैं किसी खास जातिके भलेकी बात नहीं सोच सकता। मैंने हर जातिका अेकसा सेवक और नुमाअिन्दा बननेकी कोशिश की है। लेकिन क़ायदे आज़म और मैंने अेक बार फिर साफ़ लफ़्ज़ोंमें यह अैलान किया कि हम सौगन्ध खाकर यह कहते हैं कि सियासी मक़सदोंको हासिल करनेके लिअे हिंसाका सहारा लेना हमेशा बुरा है। हम दोनों अिस बातका वचन दे चुके हैं

बहुतसे लोग मेरे जिन्ना साहबके पास जानेका विरोध करते हैं। लेकिन मुझे विश्वास है कि अिससे कोअी नुक़सान नहीं होगा। आख़िर हम दोनो हिन्दुस्तानी ही हैं और हमें अेक ही देशमें रहना होगा।

गांधीजीने अेक बहन, अेक मशहूर हिन्दू महासभाअीकी पत्नी, के खतका ज़िक्र किया, जिसमें हमेशाकी दलीलें देकर .कुरानकी आयतें पढ़ने पर अैतराज़ अुठाया गया है। अुन्होंने कहा कि अेक औरतके अैसे अेतराज़ करनेपर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं मर्दोंकी बनिस्बत औरतोंसे प्रेम और सहिष्णुता या रवादारीकी ज़्यादा अुम्मीद रखता हूँ। मुझे यह देखकर ताज्जुब होता है कि औरतें अिससे बिलकुल अुलटी दिशामें जा रही हैं। अगर अुनके दिल नफ़रतसे भरे हों, तो वे अपने बच्चोंको क्या सिखायेंगी या सिखा सकती हैं?

गांधीजीने कहा कि यह दलील ग़लत है कि चूँकि कुछ मज़हबी पागलपनके शिकार बने मुसलमानोंने बंगाल और पंजाबमें हिन्दुओंपर .जुल्म किये हैं, अिसलिअे .कुरानशरीफ़ बुरा है। बिहारमें हिन्दू पागल बन गये थे, लेकिन अिससे गीताकी महिमा नहीं घटी। अगर आप .जुल्म करनेवाले मुसलमानोंको अपने घरोंमें न आने दें, तो मैं आपकी अिस बातको समझ सकता हूँ। लेकिन आपका यह काम भी सच्चे धर्मके बिलकुल खिलाफ़ है, जो आदमीको दुश्मनोंसे भी प्रेम करना सिखाता है। चूँकि आपके दिलमें अिस्लामके माननेवालोंके लिअे नफ़रत भरी है, अिसलिअे अुनके किसी धर्म-ग्रन्थमेंसे कोअी आयत पढ़नेकी अिच्छा न रखना सच्चे धर्मके खिलाफ़ है। आपका यह तरीक़ा हिन्दू-धर्मको बचानेके बजाय अुसे मिटा देगा।

गांधीजीने आगे चलकर कहा कि लोगोंकी यह दलील भी ग़लत है कि मैं मसजिदमें गीता नहीं पढ़ सकता और कोअी मुसलमान अपने मज़हबी ग्रन्थोंको छोड़ दूसरे मज़हबोंके ग्रन्थोंमेंसे अेक श्लोक भी नहीं पढ़ेगा। मैंने मुस्लिम घरोंमें भी अपनी प्रार्थना की है। नोआखालीमें अेक मसजिदके अहातेमें ही मैंने प्रार्थना की थी। मसजिदकी देखभाल करनेवाले मौलवीने कोअी अेतराज़ नही किया और कहा कि भगवान्‌को राम और रहीमके नामोंसे पुकारना पूरी तरह ज़ायज है।

अिसके बाद गांधीजीने .कुरानकी अेक आयतका नीचे लिखा तरजुमा पढ़ा:

"शैतानसे बचनेके लिअे मैं .खुदाकी शरणमें जाना चाहता हूँ। अै .खुदा! मैं हर काम तेरा नाम लेकर शुरू करता हूँ। तू दयालु और रहमदिल है। तूने यह सृष्टि (ख़िल्क़त) बनाअी है। तू सबका मालिक है। मैं सिर्फ़ तेरी ही तारीफ़ करता हूँ और तेरी ही मदद चाहता हूँ। क़यामतके दिन तू ही अिन्साफ़ करेगा। तू मुझे सही रास्ता दिखा, वह रास्ता जिसपर तेरे भक्त चले हैं। लेकिन मुझे अुन लोगोंके बुरे रास्तेसे बचा, जिन्होंने तुझे नाराज़ किया है। .खुदा अनादि, अनन्त और सर्वशक्तिमान् है। अुसके बराबर दूसरा कोअी नहीं। अुसने दुनियाकी सारी चीज़ें बनाअी हैं। लेकिन अुसे किसीने नहीं बनाया।"

गांधीजीने कहा कि अगर अिस आयतका हर शब्द आपके दिलोंमें बस जाय तो आप सब अूँचे अुठेंगे और ज़िन्दगीमें फ़ायदा अुठायेंगे। तरजुमा हिन्दीमें था, अिसलिअे किसीने विरोध नहीं किया। लेकिन ज्योंही गांधीजीने अुसे अरबीमें पढ़ना शुरू किया, त्योंही कुछ लोगोंने विरोध किया। अुन्होंने लोगोंको समझाया कि आपका यह तरीक़ा बेसमझीसे भरा हुआ है। मुझे आशा है कि आप अपने अिस अंधेरेको दूर करनेके लिअे भगवान्‌से प्रार्थना करेंगे।

(अंग्रेज़ीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
गांधीजीके सोचने और काम करनेका तरीक़ा	... अमृतकुँवर	१२९
धर्मकथा	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	१३०
ग्राम-सेवक-विद्यालय	... जे० सी० कुमारप्पा	१३०
अिन्साफ़से टैक्स लगाया जाय	... जे० सी० कुमारप्पा	१३१
रेडियो-बजारत और खादी	... श्रीमन्नारायण अग्रवाल	१३१
अभी चले जाओ!	... गांधीजी	१३२
अेक साँसमें दो विरोधी बातें	... जे० सी० कुमारप्पा	१३३
गांधीजीका अखबारी बयान	...	१३३
गांधीजीकी दिल्लीकी डायरी	...	१३४

www.vinoba.in